ओ३म्

महर्षि दयानन्द कृत

यजुर्वेद 21/43 भाष्य

पर भ्रान्ति निवारण एवं भाषानुवाद

यशपाल आर्य

Arya Research Team | Aryavart Regenerator

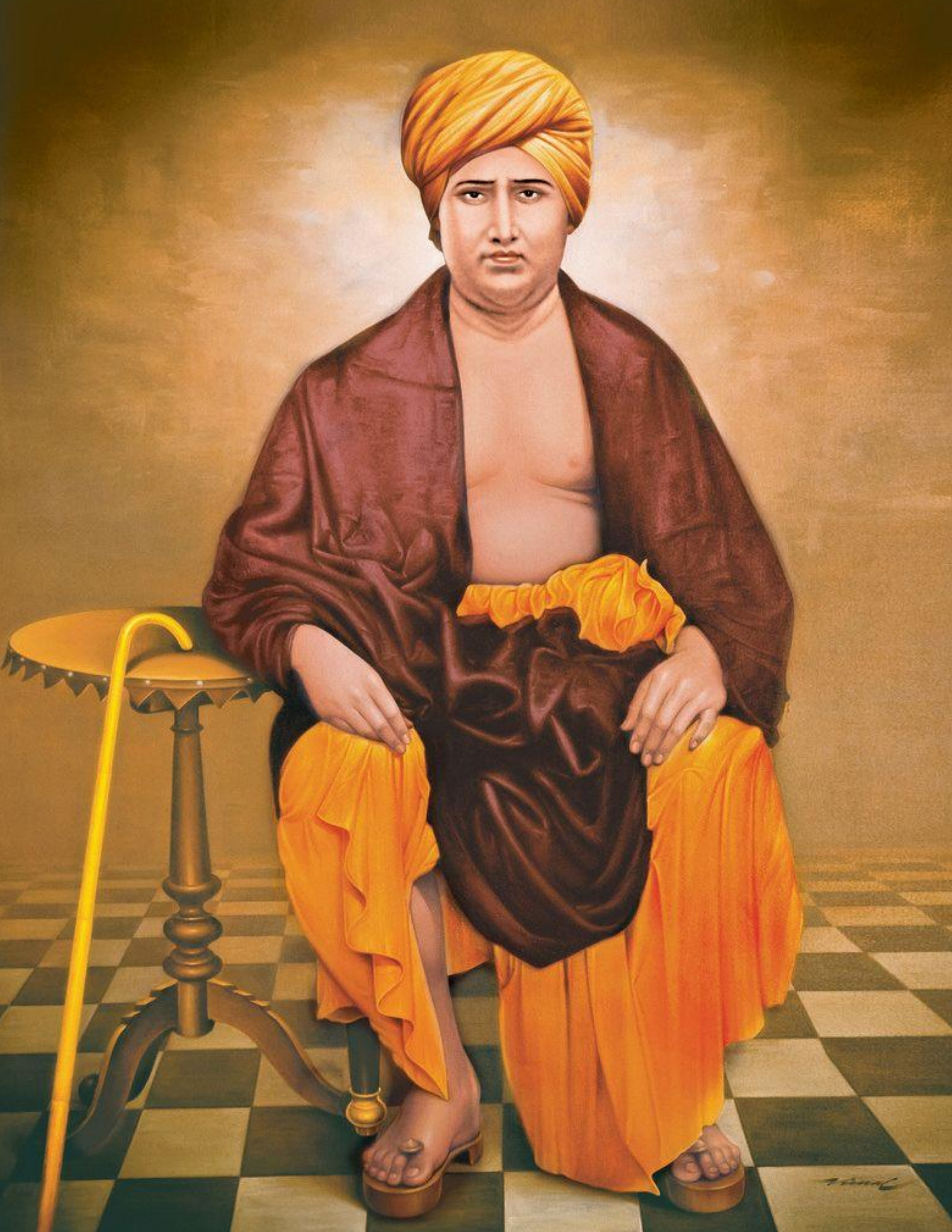

ओ३म्

महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद 21/43 भाष्य पर भ्रान्ति निवारण एवं भाषानुवाद

लेखक

यशपाल आर्य

प्रकाशक

Arya Research Team

प्रथम संस्करण :

श्रावण पूर्णिमा (ऋषि तर्पण, श्रावणी पर्व, रक्षाबंधन)

11 August 2022

सृष्टि संवत- 1,96,08,53,123

कलि संवत- 5,123

विक्रम संवत- 2079

दयानन्दाब्द- 198

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित

संपादक – यशपाल आर्य

प्रकाशक: Arya Research Team

Email: aryaresearcher@gmail.com

भूमिका

कुछ लोग महर्षि दयानन्द जी का मजाक बनाते हुए कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में बकरे के दूध को पीने को कहा है। भला कहीं बकरे का भी दूध होता है? हम यहां इसी आक्षेप का निवारण करेंगे। किंतु सर्वप्रथम हम यह स्पष्ट कर दें कि महर्षि का केवल संस्कृत भाष्य ही है, भाषा भाष्य ऋषि का नहीं है। भाषानुवाद पंडितों का है। हम अपनी बात को पुष्ट करने हेतु कुछ प्रमाण उद्धृत करते हैं-

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित भाग 2 (लेखक - देवेंद्र नाथ जी मुखोपाध्याय) के परिशिष्ट संख्या ५ में लिखा है-

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों का संचित परिचय-

(१) ऋग्वेद भाष्य - इस में मूलमन्त्र, पदपाठ, संस्कृत में पदार्थ भाष्य, अन्वय और भावार्थ देकर पुनः आर्यभाषा में अन्वयानुसार अर्थ और भावार्थ दे दिया गया है। महर्षि ने तो केवल संस्कृत भाष्य की रचना की थी। उस की भाषा पण्डितों ने बनाई है। यह भाग्य केवल मण्डल ७ | सूक्त ६१ | म० २ तक ही हुआ है। ऋषि दयानन्द अपने जीवन काल में इसे समाप्त नहीं कर सके।

(२) यजुर्वेद भाष्य- इस में ऋग्वेद के समान ही मूल मन्त्र, पदपाठ पदार्थ भाष्य, अन्वय, भावार्थ संस्कृत में और आर्य भाषा में अन्वयानुसार अर्थ और भावार्थ दिये गये हैं।

अतः यहां स्पष्ट है कि यजुर्वेद भाष्य भी ऋग्वेद की तरह ही संस्कृत में है, भाषा भाष्य पंडितों का है।

जीवनचरित महर्षि स्वामी दयायन्द सरस्वती (लेखक - पण्डित लेखराम जी) के अध्याय 9 (वेदभाष्य पर एक दृष्टि) में लिखा है –

ऋषिकृत वेदभाष्य का महत्व - उनका लिखा संस्कृत भाष्य ही वास्तविक है- सर्वविद्याओं के मूल का दर्शक, निरुक्त, निघण्टु, शतपथ आदि ऋषिकृत ग्रन्थों के आशय का प्रचारक, सृष्टि के अखंड अटल नियमों में वेदार्थ को जानने वाला महर्षि का वेदभाष्यरूपी अद्भुत ग्रन्थ आज अन्धकार से पीड़ित भूमंडल को निर्भ्रान्त निष्कलक वेदसूर्य के दर्शनों का मंगल समाचार दे रहा है। अन्धेरे में यदि लोग मार्ग नहीं देख सकते तो प्रकाश मार्ग दिखाता है परन्तु जो प्रकाश में मार्ग देखता हुआ भी मार्ग में चलने का पुरुषार्थं नहीं करता उससे बढ़कर मन्दभागी कौन हो सकता है? सत्यासत्य मार्ग के दिखाने में सहायता देना सूर्य का काम है परन्तु असत्य से बचकर सत्यमार्ग में पुरुषार्थ से चलना मनुष्यों का अपना पुरुषार्थं है। महर्षि के वेदभाष्य के होने पर भी लोग यदि दुख में रहें तो वेदभाष्यरूपी सूर्य का दोष नहीं किन्तु उन मनुष्यों के अपने आलस्य या कर्मों का फलरूपी दोष है। दिन के प्रकाश में भी जो पथिक साधनशील होकर अपने मार्ग पर चलना नहीं चाहता तो वह अपराधी है न कि सूर्य। वेद स्वयं उपदेश दे रहा है कि जो मनुष्य वेदों के मुख्य तात्पर्य- परमात्मा को नहीं जानता वह ऋग्वेद से भी सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। वास्तव में सूर्य से पुरुषार्थ करने वाले ही लाभ उठा सकते है। साधन और पुरुषार्थरहित अंधे और पालसी पुरुष नहीं। जिसकी बुद्धि की आंख फूट गई हो उसके लिए शास्त्र का सूर्य भी क्या कर सकता है। आजकल कई अंग्रेजी जानने वाले जो वेदमन्त्रों का स्वरसहित पाठमात्र भी नहीं कर सकते वह हँसी के रूप में महर्षि के सारगर्भित वेदभाष्य को समाचारपत्र की भांति देखते हैं और महर्षि के सरल संस्कृतयुक्त लेख को छोड़कर अनुवादकों के प्रमाणित भाषालेख में से भी केवल भाषार्थ को दो मिनट में पढ़कर निर्णय दे देते हैं कि इसमे कोई नई विद्या की बात प्रतीत नही होती, यह भाष्य साधारण पुस्तक ही है। सूर्य के गुण और पूर्णता की साक्षी वही मनुष्य दे सकता है जो स्वस्थ होने पर सत्यमार्ग में पुरुषार्थ से चलना चाहे परन्तु

साधनरहित आलसी पुरुष सूर्य की महिमा को कब अनुभव कर सकता है। वेद भाष्य के श्रेष्ठ गुण पूर्वोक्त प्रकार के अंग्रेजी जानने वाले, जो उसके समझने के साधनों से रहित है और जिनके फैशनेबल हृदय में विद्यामृत के पान की इच्छा तक नहीं है, जो रातदिन पश्चिमी अनुकरण धौर फैशन की पूजा में निमग्न और तामसी आहार-व्यवहार में लम्पट हैं, जो अपने विचार और अपनी सात्त्विक बुद्धि से काम लेना नहीं चाहते, प्रत्युत जो कहने के लिए मनुष्य को भूल करने वाला बतलाते हुए स्वयं साधारण पश्चिमी मनुष्यों के भ्रमों को निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान से बढ़कर मान रहे हैं, वे इस प्रकार के फैशनेबल (Fashionable) साधनरहित यदि वेदभाष्य के रत्नों की उत्तमता और महानता की न समझ सकें तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये। क्योंकि वे उसके समझने के यथार्थ उपाय ही नहीं करते।

वस्तुतः समयाभाव के कारण ऋषि ने वेद भाष्य को अति संक्षिप्त और सांकेतिक ही किया। किन्तु उन्हें हिन्दी अनुवादकों से अपेक्षा थी कि वे उनके भावों को यथार्थ रूप में समझकर पदार्थ पदार्थ, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। वेदार्थ से अनभिज्ञ लोग हिन्दी पदार्थ देखकर ऋषि के भाष्य पर आक्षेप करते हैं। अतः हम महर्षि दयानन्द कृत संस्कृत भाष्य पर ही विचार करेंगे।

*****

भ्रान्ति निवारण एवं भाषानुवाद

आप सर्वप्रथम यजुर्वेद २१/४३ का संस्कृत भाष्य देखें-

होतेत्यस्य स्वस्त्यात्रेय ऋषिः। होत्रादयो देवताः। आद्यस्य याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। हविष इत्युत्तरस्योत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

होता यक्षदश्विनौ छागस्य हविषऽआत्तामद्य मध्यतो मेदऽउद्भृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घस्तां नूनं घासेऽअज्राणां यवसप्रथमानाᳬं सुमत्क्षराणाᳬं शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामतऽउत्सादतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करतऽएवाश्विना जुषेताᳬं हविर्होतर्यज॥४३॥

होता। यक्षत्। अश्विनौ। छागस्य। हविषः। आत्ताम्। अद्य। मध्यतः। मेदः। उद्भृतमित्युत्ऽभृतम्। पुरा। द्वेषोभ्य इति द्वेषःऽभ्यः। पुरा। पौरुषेय्याः। गृभः। घस्ताम्। नूनम्। घासेऽअज्राणामिति घासेऽअज्राणाम्। यवसप्रथमानामिति यवसऽप्रथमानाम्। सुमत्क्षराणामिति सुमत्ऽक्षराणाम्। शतरुद्रियाणामिति शतऽरुद्रियाणाम्। अग्निष्वात्तानाम्। अग्निस्वात्तानामित्यग्निऽस्वात्तानाम्। पीवोपवसनानामिति पीवःऽउपवसनानाम्। पार्श्वतः श्रोणितः। शितामतः। उत्सादत इत्युत्ऽसादतः। अङ्गादङ्गादित्यङ्गात्ऽअङ्गात्। अवत्तानाम्। करतः। एव। अश्विना। जुषेताम्। हविः। होतः। यज॥४३॥

पदार्थः-(**होता**) आदाता (**यक्षत्**) (**अश्विनौ**) अध्यापकोपदेशकौ (**छागस्य**) (**हविषः**) आदातुमर्हस्य

एकविंशोऽध्यायः १२२७

दुष्टेभ्यः (**पुरा**) (**पौरुषेय्याः**) पुरुषाणां समूहे साध्व्यः (**गृभः**) ग्रहीतुं योग्यायाः (**घस्ताम्**) भक्षयताम् (**नूनम्**) निश्चितम् (**घासेअज्राणम्**) भोजनेऽग्रे प्राप्तव्यानाम् (**यवसप्रथमानाम्**) यवसो यवान्नं प्रथमं येषां तेषाम् (**सुमत्क्षराणाम्**) सुष्ठु मदां क्षरः संचलनं येषां तेषाम् (**शतरुद्रियाणाम्**) शतं रुद्राः शतरुद्राः शतरुद्रा देवता येषां तेषाम् (**अग्निष्वात्तानाम्**) अग्निः सुष्ठ्वात्तो गृहीतो यैस्तेषाम् (**पीवोपवसनानाम्**)

पीवांस्युपवसनान्याच्छादनानि येषां तेषाम् **(पार्श्वत:)** उभयत: **(श्रोणित:)** कटिप्रदेशात् **(शितामत:)** शितस्तीक्ष्ण आमोऽपरिपक्वं यस्मिंस्तस्मात् **(उत्सादत:)** उत्सादनं कुर्वत: **(अङ्गादङ्गात्)** प्रत्यङ्गात् **(अवत्तानाम्)** नम्रीभूतानामुत्कृष्टानामङ्गानाम् **(करत:)** कुर्याताम् **(एव)** **(अश्विना)** सद्वैद्यौ **(जुषेताम्)** **(हवि:)** अत्तुमर्हम् **(होत:)** **(यज)**॥४३॥

अन्वय:-हे होतर्यथा होताश्विनौ यक्षत् तौ चाद्य छागस्य मध्यतो हविषो मेद उद्भृतमात्तां यथा वा पुरा द्वेषोभ्यो गृभ: पौरुषेय्या: पुरा नूनं घस्तां यथा वा यवसप्रथमानां घासेअज्राणां सुमत्क्षराणां शतरुद्रियाणां पीवोपवसनानामग्निष्वात्तानां पार्श्वत: श्रोणित: शितामत उत्सादतोऽङ्गादङ्गादवत्तानामेवाश्विना करतो हविर्जुषेतां तथा त्वं यज॥४३॥

भावार्थ:-ये छागादीनां रक्षां विधाय तेषां दुग्धादिकं सुसंस्कृत्य भुक्त्वा द्वेषादियुक्तान् पुरुषन्निवार्य सुवैद्यानां सङ्गं कृत्वा शोभनं भोजनाऽऽच्छादनं कुर्वन्ति, ते प्रत्यङ्गाद् रोगान्निवार्य सुखिनो भवन्ति॥४३॥

आप इस मंत्र के ऋषि के भाष्य को देखेंगे तो विदित होगा कि ऋषि समयाभाव के कारण छागस्य पद का अर्थ किए बिना ही छोड़ कर आगे बढ़ गए क्योंकि उन्होंने पहले ही इस पद का अर्थ किया था इसलिए उन्हें लगा कि भाषानुवाद करने वाले पंडित इसका भाषार्थ में सही अर्थ कर देंगे किन्तु उन लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया।

इसका सही अर्थ जानने हेतु हम सर्वप्रथम छाग शब्द का वेद भाष्य में महर्षि दयानंद जी द्वारा किए हुए कुछ अर्थ उद्धृत करते हैं-

१. छागस्य = अजादेः (यजुर्वेद २१.४१)
२. छागेन = अजादिदुग्धेन (यजुर्वेद १९.८९)

अब इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि यहां इस प्रसंग में बकरी अर्थ का ही ग्रहण होगा। इस प्रकार छागस्य पद का अर्थ "बकरी आदि पशुओं के" होगा। ऋषि ने छागस्य पद का यही अर्थ यजुर्वेद २१.४१ के संस्कृत भाष्य में किया है, अतः उन्होंने दो मंत्र आगे (यजुर्वेद

२१.४३) आए इस पद का अर्थ करना आवश्यक नहीं समझा क्योंकि उन्हें लगा कि भाषा भाष्य करने वाले उस पद से अर्थ समझ लेंगे किंतु उन लोगों ने अर्थ समझने में गड़बड़ कर दिया तथा इतना स्पष्ट होने पर भी यजुर्वेद २१.४१ में भी बकरे का ही अर्थ ग्रहण किया, यहाँ तो ऋषि ने उस पद का अर्थ भी नहीं किया तो त्रुटि करना तो स्वाभाविक था।

हम सब जानते हैं वेद के पदार्थ व भावार्थ में विरोध नहीं होता। अतः इस मंत्र पर सर्वप्रथम हम महर्षि का भावार्थ देखते हैं-

ये छागादीनां रक्षां विधाय तेषां दुग्धादिकं सुसंस्कृत्य भुक्त्वा द्वेषादियुक्तान् पुरुषन्निवार्य सुवैद्यानां सङ्गं कृत्वा शोभनं भोजनाऽऽच्छादनं कुर्वन्ति, ते प्रत्यङ्गाद् रोगान्निवार्य सुखिनो भवन्ति॥

इसका अर्थ करते हुए भाषा भाष्य में भी लिखा है-

जो छेरी आदि पशुओं की रक्षा कर उनके दूध अदि का अच्छा-अच्छा संस्कार और भोजन कर वैरभावयुक्त पुरुषों को निवारण कर और अच्छे वैद्यों का संग करके उत्तम खाना, पहिरना करते हैं, वे प्रत्येक अंग से रोगों को दूर कर सुखी होते हैं॥

यहां इसी मंत्र के भाष्य के भावार्थ में ऋषि कृत भाष्य के साथ साथ उनके भाष्य का भाषा भाष्य करने वाले ने भी बकरी ही अर्थ ग्रहण किया है तो अल्पबुद्धियों द्वारा यह आक्षेप लगाया जाना कि यहां महर्षि दयानन्द ने बकरा अर्थ किया है, इसका पूर्णतः खंडन हो जाता है।

अब हम इसका सही अर्थ करते हैं, जो इस प्रकार है -

हे (होतः) दाता पुरुष! जैसे (होता) विद्या को लेने अर्थात् ग्रहण करने वाला (अश्विनौ) अध्यापक और उपदेश करने हारे का (यक्षत्) संग करे और वे (अद्य) आज (छागस्य) बकरी आदि पशुओं के (मध्यतः) मध्य से (हविषः) ग्रहण करने योग्य पदार्थ (मेदः) घी दुग्ध आदि चिकने पदार्थों को (उद्भृतम्) श्रेष्ठ प्रकार से धारण करके (आत्ताम्) सेवन करें।

अथवा जैसे (द्वेषोभ्यः) दुष्टों से (पुरा) प्रथम (गृभः) ग्रहण करने योग्य (पौरुषेय्याः) पुरुषों के समूह में साध्वी स्त्रियों से (पुरा) पहिले (नूनम्) निश्चय करके (घस्ताम्) खावें वा जैसे (यवसप्रथमानाम्) जौ जिनका पहला अन्न, (घासेअज्राणाम्) आनंद को संचालित करने हारे, (सुमत्क्षराणाम्) उत्तम आनन्दों का संचालन करने हारे, (शतरुद्रियाणाम्) रुलाने वाले सैकड़ों विद्वान (पीवोपवसनानाम्) पीव् का एक अर्थ हृष्ट पुष्ट होता है अतः यहां पीवोपवसनानाम् का तात्पर्य कवच से है वा पीव् का एक अर्थ मोटा भी होता है तो अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि मोटे मोटे वस्त्रों को धारण कर के (अग्निष्वात्तानाम्) जिन्होंने भलीभांति अग्निविद्या का ग्रहण किया हो यहां ईश्वर और भौतिक अग्नि दोनों ही ग्रहण होंगे इसके लिए आप ऋषि कृत पंच महायज्ञ विधि के पितृयज्ञ प्रकरण को देख सकते हैं, वहां ऋषि लिखते हैं “अग्निरीश्वरः सुष्ठुतया आत्तो गृहीतो यैस्ते 'अग्निष्वात्ताः'। यद्वा अग्नेर्गुणज्ञानात् पृथिवीजलव्योम - यान- यन्त्ररचनादिका पदार्थविद्या सुष्ठुतया आत्ता गृहीता यैस्ते।” वहीं इसके भाषार्थ में लिखा है “अग्नि जो परमेश्वर वा भौतिक उनके गुण ज्ञात करके जिनने अच्छे प्रकार अग्निविद्या सिद्ध की है, उनको 'अग्निष्वात्ताः' कहते हैं।” (पार्श्वतः) दोनों ओर (श्रोणितः) कटिप्रदेश (शितामतः) तीक्ष्ण व अपरिपक्व स्थान से (उत्सादतः) उखाड़े हुए (अङ्गादङ्गात्) प्रत्येक अंग से (अवत्तानाम्) नम्र व उत्तम अंगों की (एव) ही (अश्विना) दो श्रेष्ठ वैद्य (करतः) चिकित्सा करें और (हविः) उक्त पदार्थों से खाने योग्य पदार्थ का (जुषेताम्) सेवन करें, वैसे (यज) सब पदार्थों वा व्यवहारों की संगति किया करें॥

भाष्यासार - इस मंत्र में कहा है कि श्रेष्ठ विद्याओं को ग्रहण करने वाले लोग उत्तम विद्वानों और उपदेशकों का संग करें तथा बकरी आदि पशुओं से घी, दुग्ध आदि पदार्थ प्राप्त कर उनका यथावत उपयोग लेवें। वा जैसे साध्वी स्त्रियों से पूर्व पुरुष निश्चय कर के खावें। वस्तुतः स्त्री को वैदिक धर्म में घर की स्वामिनी कहा है इसीलिए यहां कहा है कि स्त्रियां

विद्वान पुरुषों को पूर्व भोजन कराएं किंतु दुष्टों को भोजनादि न दें। आगे कहा है कि कवच वा बर्फीले प्रदेशों में रह कर मोटे मोटे वस्त्र धारण करने वाले, अग्नि आदि विद्या को जानने वाले तथा दुष्टों को रुलाने वाले सैनिकों की दो श्रेष्ठ वैद्य शल्य चिकित्सा आदि के द्वारा उन्हें स्वस्थ करें।

अब यहां कुछ लोग ऐसा प्रश्न कर सकते हैं कि छागस्य शब्द तो पुलिंग का वाचक है तो स्त्रीलिंग में इसका अर्थ किस प्रकार किया जा सकता है? उत्तर है वेद और आर्ष ग्रंथों का सही अर्थ करने में तर्क और ऊहा सहायक है। इसीलिए महर्षि यास्क ने तर्क को ऋषि और ऊहा को ब्रह्म कहा है। देखें प्रमाण -

अयं मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूहोऽभ्यूळहः। अपि श्रुतितोऽपि तर्कतः। न तु पृथक्त्वेन मन्त्रा निर्वक्तव्याः। प्रकरणश एव तु निर्वक्तव्याः।

तर्कमृषिं प्रायच्छन्मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूहमभ्यूळहम्।
(निरुक्त अध्याय १३, खण्ड १२)

ऊह एषां ब्रह्मेति वा।
(निरुक्त अध्याय १३, खण्ड १३)

अतः यहां तर्क और ऊहा से बकरी ही अर्थ ग्रहण हो जाएगा। व्याकरण वेद और ऋषियों के ग्रंथों को देख कर ही बना है तथा वैदिक व लौकिक संस्कृत में भिन्नता होने से लौकिक संस्कृत का नियम वेद पर नहीं आरोपित किया जा सकता। मीमांसा दर्शन पर शबर स्वामी भाष्य लिखते हैं और उनका काल शंकराचार्य जी से पूर्व का है और उनके मीमांसा भाष्य का पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक भाषा अनुवाद करते हैं। मीमांसा अध्याय

२, पाद १, सूत्र २० के शबर स्वामी के भाष्य के विवरण में पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक जी लिखते हैं-

विवरण - इस प्रकरण को समझने के लिये मी० प० ६ पा० ८ प्रधि० १० (सूत्र ३० ४२) को जानना आवश्यक है। वहां प्रश्न यह है कि 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' विधि में पशु शब्द का प्रयोग होने से किसी भी पशु का आलंभन करना चाहिये, अथवा अज = बकरा पशु का ही। वहां सिद्धान्त किया है कि छागो वा मन्त्रवर्णात्। श्रग्नये छागस्य वपाया मेदसोऽ ब्रूहि मन्त्र में छाग का निर्देश है। छाग शब्द का निर्देश करके किसी कर्म का विधान नहीं किया है। इसलिये यदि छाग अज का ग्रहण न किया जाये, तो छाग को कहने में समयं मन्त्र का पाठ व्यर्थ होवे। इसलिये ग्रग्नीषोमीयं पशुमालभेत विधिवाक्य में छाग = अज पशु का ग्रहण ही प्रभीष्ट है।

इस निर्णय के पश्चात् यह जानना आवश्यक है कि समस्त पशुयागों की प्रकृति सोम यागान्तर्गत अग्नीषोमीय पशुयाग है। क्योंकि पशुसम्बन्धी समस्त विधियों का विधान शाखाओं और ब्राह्मणग्रन्थों में इसी प्रकरण में मिलता है। पूर्व १५वें सूत्र के भाष्य में उद्धृत सा वा एषा सर्वदेवत्या यदजा वशा, वायव्यामालभेत वचन से निर्दिष्ट पशुयाग विकृतिरूप है। विकृतिसंज्ञक कर्म प्रकृतिवद् विकृतिः कर्तव्या नियम के अनुसार अपनी प्रकृति से धर्मों को ग्रहण करते हैं। अतः अजा वशा याग में भी अग्नीषोमीय प्रकृति से छागस्य बपाया मेदसोऽनुव हि मन्त्र उपस्थित होता है। प्रकृतिपठित मन्त्र में छागस्य पुल्लिङ्ग निर्देश है। उसे अजावशा याग में अर्थ के अनुकूल लिङ्ग की कह करके छागाया (छाया) गपाया मेदसोऽनुब्रू हि के रूप में बोलना पड़ता है। छागी में वशा=वन्ध्यारूप अर्थ संबद्ध देखा जाता है।

इसपर मीमांसक जी की यह पाद टिप्पणी भी द्रष्टव्य है -

मीमांसा-भाष्य प्रादि कुछ ग्रन्थों में छाग का स्त्रीलिङ्गरूप छागा प्रयुक्त है। इसमें अजादिगण (गणपाठ ४|१|४) को धाकृतिगण मानकर स्त्रीलिङ्ग में टाप् प्रत्यय जानना

चाहिये। सुबोधिनी यादि ग्रन्थों और कोशग्रन्थों में छागी प्रयोग देखा जाता है। इसमें जातेरस्त्रीविषया दोषघात (अष्टा० ४।१।६३) से स्त्रीलिङ्ग में ङीष प्रत्यय होता है। इसलिये हमने छागस्य पद के कह में छागाया और छाया दोनों का निर्देश किया है।

अर्थात् यहाँ से भी सिद्ध है कि छागस्य पद का अर्थ प्रकरण अनुकूल बकरी भी होता है। आप प्रकृति विकृति का लक्षण पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक कृत 'श्रोतयज्ञमीमांसा' निबन्ध (भाग १ के आरम्भ में मुद्रित) के पृष्ठ ९२-९३ पर देख सकते हैं।

अब भी कुछ हठी लोग इस हट पर अड़े होंगे कि यहाँ तो छागस्य पद है, हम तो बकरा ही अर्थ लेंगे बकरी अर्थ लेना जबरदस्ती है, वे लोग बताएं कि राष्ट्रपति शब्द पुंलिंग में प्रयुक्त होता है तथा वर्त्तमान समय में भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी हैं, तो क्या वे लोग तर्क और ऊहा से राष्ट्रपति शब्द को स्त्रियों के प्रयुक्त होना स्वीकार नहीं करेंगे? जैसे यहाँ लौकिक उदाहरण में तर्क तथा ऊहा से दोनों लिंगों में शब्द को स्वीकार किया जा रहा है, तो वैदिक संस्कृत जैसी यौगिक भाषा में पुलिंग वाचक शब्द को दोनों लिंगों में स्वीकार क्यों नहीं किया जा सकता?

ईश्वर ऐसे लोगों को सद्बुद्धि प्रदान करे, जिससे वे लोग सत्य को स्वीकार कर के अपने मनुष्यपन को सार्थक कर सकें, इसी के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

॥ ओ३म् शम् ॥

*****

सन्दर्भित एवं सहायक ग्रन्थ

ग्रन्थ	लेखक/भाष्यकार/संपादक
१. यजुर्वेद भाष्य	महर्षि दयानंद जी सरस्वती
२. यजुर्वेद भाष्य भास्कर	पण्डित सुदर्शन देव जी आचार्य
३. पञ्चमहायज्ञविधिः	महर्षि दयानंद जी सरस्वती
४. निरुक्त	महर्षि यास्क
५. जीवन चरित्र महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती	पण्डित लेखराम जी
६. महर्षि दयानन्द का जीवन चरित	देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय जी
७. संस्कृत हिन्दी कोश	वामन शिवराम आप्टे जी
८. आचार्य शबरस्वामि विरचितम् जैमिनीय मीमांसा भाष्यम्	पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक

Follow Us

aryaresearcher
Blogger

aryavartregenerator
YouTube

@aryaresearcher
Twitter

@arya_researcher
Facebook

@aryaresearcher
Instagram

@aryaresearcher
Telegram

महर्षि दयानंद कृत

यजुर्वेद 21/43

पर भ्रान्ति निवारण एवं भाषानुवाद

प्रकाशक

Arya Research Team